सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

सन्देश

1956 की हंगेरियाई क्रांति ने भारत पर गहरा प्रभाव डाला। भौगोलिक दूरी के कारण अलग-अलग होते हुए भी, महात्मा गांधी जी के मार्गदर्शन में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ हमारे संघर्ष ने हमें, स्वतंत्रता के लिए सभी हंगेरियावासियों की आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील बना दिया। आपका आंदोलन एक राष्ट्रीय आंदोलन था जिसमें समाज के सभी वर्ग-विद्यार्थी, बुद्धिजीवी, किसान, कामगार, सरकारी सेवक और हंगेरियाई सेना भी विदेशी शासन के खिलाफ एकजुट हो गए थे। यद्यपि इस आंदोलन का क्रूरता से दमन कर दिया गया था पर हमें विश्वास था कि आपके संघर्ष को सफलता अवश्य मिलेगी। 19 नवम्बर, 1956 को भारतीय संसद के निचले सदन लोक सभा में अपने भावपूर्ण भाषण में, हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, ''निःसंदेह अपनी स्वतंत्रता और अलग अस्मिता के इच्छुक तथा किसी और देश के अधीन न रहने की इतनी तीव्र आकांक्षा रखने वाले हंगेरियाई देर-सवेर अवश्य विजयी होंगे।'' अन्ततः हंगेरियाई लोग विजयी हुए। वर्ष 1956 ने यह दर्शाया कि स्वतंत्रता की आकांक्षा का दमन नहीं किया जा सकता और स्वतंत्रता के प्रति उत्साहित मनुष्य की सदैव जीत होती है। आज, आपका देश स्वतंत्रता और लोकतंत्र का प्रकाश स्तंभ है। हम भी 1956 की क्रांति का उत्सव मनाने में आपके साथ हैं। हम उन लोगों की स्मृति में मौन रखते हैं और उन्हें नमन करते हैं जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वतंत्रता और लोकतंत्र की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

मैं, भारत सरकार और भारतीय जनता की ओर से हंगरी की मित्र जनता की शांति, समृद्धि और प्रगति के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

(आ.प.जै. अब्दुल कलाम)

नई दिल्ली
10 अगस्त, 2006